उपलब्धियाँ

मैत्रेयी पुष्पी की कहानियों का शिल्पगत अध्ययन करने के उपरांत जो उपलब्धियाँ प्राप्त होती है, वे सार रूप में इस प्रकार हैं -

1. मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों का कथ्य उचित शिल्प द्वारा प्रस्तुत हुआ है।
2. उनकी कहानियों का वस्तुशिल्प विशेषतः ग्रामीण विश्व को केंद्र में रखकर आगे बढ़ता है तथा ग्रामजीवन के विभिन्न पहलुओं का वास्तव चित्रण करता है।
3. ग्रामीण नारी की दास्तान प्रस्तुत करना ही उनके वस्तुशिल्प का लक्ष्य रहा है। वस्तुशिल्प में नवीनता एवं आकर्षकता के लिए वस्तुविन्यास के अंगों का क्रम बदल दिया गया है।
4. अपने अंचल-जीवन के भुक्तभोगे ग्रामजीवन के कारण ही उनकी कहानियों के सभी पात्र यथार्थ भावभूमि से उभरे है।
5. लेखिका ने विशेष रूप से विद्रोही नारी पात्रों की सृष्टि की है तथा समाज संचालन हेतु स्त्री-पुरुष समानता एवं सामंजस्य पर बल दिया है।
6. अंचल-विशेष के यथार्थ जीवन के कारण संवादों में अधिक मार्मिकता एवं सजीवता दिखाई देती है। मार्मिक एवं कलात्मक संवादों के माध्यम से मैत्रेयी पुष्पा ने अपने प्रतिपाद्य का प्रस्तुतीकरण किया है।
7. मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों का वातावरण-शिल्प अधिक सजीव हो उठा है; क्योंकि अंचल-विशेष के मानव-जीवन के विभिन्न एवं सूक्ष्म पहलुओं को यथार्थ रूप में चित्रांकित किया है।
8. लेखिका ने भावपक्ष को उचित भाषा द्वारा अभिव्यक्ति दी है। जहाँ एक ओर व्यंग्यात्मक भाषा उनके कहानियों की ताकद बनी है वहीं भावोत्कट भाषा उनके कोमल हृदय का परिचय देती है। अतः भावपक्ष को प्रभावी एवं सशक्त भाषा का आवरण प्राप्त हुआ है।

9. उन्होंने विभिन्न शैलियों का उचित प्रयोग किया है। विश्लेषणात्मक तथा मनोविश्लेषणात्मक शैली द्वारा पात्रों के मन की गहराइयों को जान लेने में सुविधा हुई है। 'मिथक शैली' नवीनता, आकर्षकता एवं रोचकता के साथ कहानी के कथ्य अभिव्यक्ति में समर्थ बनी है।

10. मानव-जीवन के विभिन्न पक्षों का मार्मिक एवं कलात्मक उद्घाटन करने से लेखिका अपने उद्देश्य में सफल हुई है तथा पाठकों के मन-मस्तिष्क को विचार के लिए गति प्रदान की गई है।

11. उचित शीर्षक शिल्प द्वारा विषय प्रतिपादन एवं कथ्याभिव्यक्ति हुई है; साथ ही कहानियाँ पाठकों को आकर्षित करती है।

अंत में निष्कर्ष रूप में नम्रतापूर्वक इतना ही कहना चाहती हूँ कि मैत्रेयी का कहानी-साहित्य नारी-जीवन की ओर देखने की नई दृष्टि प्रदान करता है तथा लेखिका के कथ्य को उचित एवं आकर्षक शिल्प में ढाँलकर उनकी कहानियों को सफल बनाता है।

अध्ययन की दिशाएँ

1. मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में चित्रित सामाजिक जीवन
2. मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों के पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन
3. मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों का भाषावैज्ञानिक अध्ययन
4. मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों का युगबोध

प्रत्येक शोध-छात्र की अपने विषय की दृष्टि से मर्यादा होती है। मैंने अपनी विषय की सीमा में ऊपरनिर्दिष्ट विषयों को लेकर यथासंभव उसकी चर्चा अवश्य की है, लेकिन ये विषय स्वतंत्र रूप से अनुसंधान की माँग रखते है। आशा है आनेवाले समय में उपर्युक्त विषय पर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ सूची

1. मैत्रेयी पुष्पा - गोमा हँसती है
किताबघर प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र. सं. 1998

2. मैत्रेयी पुष्पा - ललमनियाँ तथा अन्य कहानियाँ
राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 2002 राजकमल पेपर बैक्य में

3. मैत्रेयी पुष्पा - चिह्नार
आर्य प्रकाशन मंडल, गांधी नगर दिल्ली, तृ. सं. 2004

संदर्भ ग्रंथ सूची

4. डॉ. अमर ज्योति - महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारीवादी दृष्टि
अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 1999

5. डॉ. आशा पाण्डेय - हिन्दी व्यंग्य साहित्य की भाषा
भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं. 1998

6. डॉ. उमा मिश्रा - डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी का उपन्यास साहित्य - एक अनुशीलन
अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 1983

7. डॉ. उषा डोगरा - हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों का लोकतात्विक विमर्श
अनुभव प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 1984

8. डॉ. श्रीमती ओम शुक्ल - हिन्दी उपन्यासों की शिल्पविधि का विकास
अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर, प्र. काल 1964

9. किशोर गिरडकर - मन्नू भंडारी का कथा-साहित्य
विश्वभारती प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 1985

10. डॉ. गणेश दास - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी के विविध रूप
अक्षर प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 1992

11. संपा. गिरिराज शरण - नारी उत्पीड़न की कहानियाँ
प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं. 1986

12. गोविन्द रजनीश - पुनश्चिंतन
वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 1993

13. डॉ. घनश्याम भुतडा - समकालीन हिन्दी कहानियों में नारी के विविध रूप
अतुल प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 1993

14. डॉ. जगन्नाथप्रसाद शर्मा - कहानी का रचना-विधान
हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, द्वि. सं. 1961

15. डॉ. जितेन्द्र वत्स - साठोत्तर हिंदी कहानी और राजनीतिक चेतना
साहित्य रत्नाकर रामबाग, कानपुर, प्र. सं. 1989

16. डॉ. जैनेंद्रकुमार - साहित्य का श्रेय और प्रेय
पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 1991

17. डॉ. देवराज - साहित्य समीक्षा और संस्कृति
दि. मैकमिलन कं. ऑफ इंडिया, दिल्ली, प्र. सं. 1977

18. डॉ. नगेंद्र - विचार और विवेचन
नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, प्र. सं. 1964

19. नूरजहाँ - हिन्दी कहानी में यथार्थवाद
अभिनव भारती, इलाहाबाद, प्र. सं. 1976

20. डॉ. प्रतापनारायण टंडन - हिंदी कहानी कला
हिन्दी समिती, सूचना विभाग, उ. प्र. लखनऊ, प्र. सं. 1970

21. बटरोही - कहानी रचना प्रक्रिया और स्वरूप
अक्षर प्रकाशन प्रा. लि., अन्सारी रोड, दरियागंज दिल्ली, तृ. सं. 1973

22. डॉ. बापूराव देसाई - लोकसाहित्य
विजय प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 1996

23. डॉ. बिजली प्रभा प्रकाश - जैनेंद्र के उपन्यासों में नारी चरित्रों का मनोवैज्ञानिक धरातल
क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली, प्र. सं. 1991

24. संपा. म. ह. राजूरकर, संपा. भगवानदास वर्मा - नयी कहानी : दृष्टि और सृष्टि
पुस्तक संस्थान, कानपुर, प्र. सं. 1978

25. मैत्रेयी पुष्पा - कस्तूरी कुंडल बसै
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली, प्र. सं. 2002, पहली आवृत्ति 2003

26. डॉ. मंगल मेहता - स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी : वस्तुविकास एवं शिल्पविकास
प्रगति प्रकाशन, आगरा, प्र. सं. 1984

27. डॉ. रघुवरदयाल वार्ष्णेय - हिन्दी कहानी के बदलते प्रतिमान
पांडुलिपि प्रकाशन, कृष्णनगर, दिल्ली, प्र. सं. 1975

28. राजनाथ शर्मा - साहित्यिक निबंध
विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, आठवाँ संस्करण, प्र. वर्ष 1965

29. राहुल भारद्वाज - नवें दशक की हिन्दी कहानी में मूल्य विघटन
जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, प्र. सं. 1999

30. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास
साहित्य भवन लि. प्रयाग, द्वि. सं. 1960

31. डॉ. लक्ष्मीनारायण वार्ष्णेय - आधुनिक कहानी का परिपार्श्व
साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद, प्र. सं. 1966

32. श्री. शिवनारायण श्रीवास्तव - हिन्दी उपन्यास
सरस्वती मंदिर, बनारस, तृ. सं. संवत 2007 वि.

33. डॉ. शुभकार कपूर - आचार्य चतुरसेन शास्त्री का कथा साहित्य
विवेक प्रकाशन, लखनऊ, प्र. सं. 1965

34. डॉ. सत्यपाल चुघ - प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासों की शिल्पविधि
लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र. सं. 1968

35. डॉ. सुदेश बत्रा - नारी अस्मिता - हिंदी उपन्यासों में
रचना प्रकाशन, जयपुर, प्र. सं. 1998

36. डॉ. सुरेश बाबर - भीष्म साहनी के साहित्य का अनुशीलन
अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 1997

37. डॉ. ह. के. कडवे - हिन्दी उपन्यासों में आँचलिकता की प्रवृत्ति
अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, प्र. वर्ष 1982

38. संपा. हिंदी अध्ययन मण्डल, शिवाजी विश्वविद्यालय - कहानी कलश
अमन प्रकाशन, कानपुर, प्र. वर्ष 2001

39. हेतु भारद्वाज - स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में मानव प्रतिमा
पंचशील प्रकाशन, जयपुर, प्र. सं. 1983

कोश ग्रंथ

40. संपा. कालिका प्रसाद - बृहत् हिन्दी कोश
ज्ञानमंडल लि. वाराणसी, पुनर्मुद्रित 2005

41. संपा. नगेन्द्रनाथ वसु - हिन्दी विश्वकोश
बी. आर. पब्लिशिंग कार्पोरेशन, दिल्ली, पुनर्मुद्रित 1986

42. संपा. श्री नवलजी - नालंदा विशाल शब्दसागर
आदिश बुकडेपो, देहली, सं. 1988

43. संपा. पं. रविदत्त शास्त्री - मेगा हिन्दी शब्दकोश
अरिहन्त पब्लिकेशन्स प्रा. लि., मेरठ

44. संपा. रामचन्द्र वर्मा - मानक हिन्दी कोश
हिंदी साहित्य संमेलन, प्रयाग, पुनर्मुद्रित 1986

45. संपा. रामचन्द्र वर्मा - संक्षिप्त हिंदी शब्दसागर
नागरी प्रचारिणी सभा काशी, षष्ठ सं. सं 2014 वि.

पत्र-पत्रिकाएँ

1. संपा. राजेंद्र यादव - 'हंस' मासिक, जुलाई 2004, अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली

891.433
BHO
T15506